



2026:AHC:27836-DB

21.01.2026 को सुरक्षित:

09.02.2026 को पारित

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 3260 वर्ष 1985

विजय सिंह

.....अपीलकर्ता

बनाम

राज्य

.....प्रत्यर्थी

अपीलकर्ता के अधिवक्ता : अजय कुमार सिंह, अश्विनी कुमार अवस्थी, डीजीए,
आर. पी. सिंह परिहार, तरुण प्रताप सिंह

प्रत्यर्थी के अधिवक्ता : राम प्रसाद सिंह

न्यायालय संख्या - 46

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ,

माननीय न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय,

(न्यायमूर्ति सिद्धार्थ द्वारा प्रदत्त)

1. श्री मनीष तिवारी, विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता, जिनकी सहायता श्री अथर्व दीक्षित और श्री औशिम लूथरा ने की, अपीलकर्ता की ओर से; और राज्य की ओर से श्री जी.एन. कनौजिया, विद्वान ए.जी.ए.-I (प्रथम) को सुना, और विचारण न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया।
2. ऊपर बताई गई आपराधिक अपील, अपर सत्र न्यायाधीश, कानपुर द्वारा सत्र विचारण संख्या 63/एम वर्ष 1984 में दिनांक 03.12.1985 को पारित निर्णय और आदेश के विरुद्ध दायर की

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



गई है; जिसमें अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई है और दोषी ठहराया गया है।

3. अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि विजय सिंह का कानपुर के बेकनगंज स्थित परेड, मुन्ना लाल स्ट्रीट में एक अलग क्वार्टर था। उसके अन्य भाई-बहन आस-पास के ही एक दूसरे घर में रहते थे। श्रीमती विद्या को विजय सिंह की रखैल बताया जाता है। मृतक अजय सिंह, 4.11.1983 को शाम लगभग 5 बजे अभियुक्त विजय सिंह के क्वार्टर में घुसा और खाने-पीने की चीज़ें निकालने के लिए फ्रिज खोला। श्रीमती विद्या ने इस पर आपत्ति जताई। इसके चलते मृतक अजय सिंह और श्रीमती विद्या के बीच कहा-सुनी हो गई। अजय सिंह ने श्रीमती विद्या के साथ हाथापाई की, और उसे गालियाँ देते हुए क्वार्टर से बाहर निकल आया। इस कहा-सुनी और गाली-गलौज की आवाज़ सुनकर अजय सिंह का दूसरा भाई अशोक सिंह, उसकी भाभी इंदिरा, और उसका दोस्त सुबोध सक्सेना घटना स्थल पर पहुँच गए। श्रीमती विद्या भी अजय सिंह के पीछे-पीछे बाहर आई और पलटकर उसे गालियाँ दीं। इसी बीच, अभियुक्त विजय सिंह, जो दीपावली की खरीदारी करने गया हुआ था, वापस आ गया। श्रीमती विद्या ने उससे अजय सिंह के बर्ताव की शिकायत की और गिड़गिड़ाते हुए कहा कि, "आपके यहाँ मौजूद होने और आपके पास लाइसेंसी पिस्तौल होने के बावजूद मेरे साथ बुरा बर्ताव किया जा रहा है; आखिर यह पिस्तौल किस काम आएगी?" इस बात से विजय सिंह आग-बबूला हो गया और उसने अजय सिंह को हुक्म दिया कि वह उसकी नज़रों से दूर चला जाए, वरना वह उसे गोली मार देगा। अजय सिंह ने अपने बड़े भाई का हुक्म नहीं माना; इसके विपरीत, उसने पलटकर यह कहा कि उसके भाई विजय सिंह ने एक 'बदचलन' (बदनाम) औरत को अपने साथ रखा हुआ है, जिसके कारण पूरे परिवार की इज्जत दांव पर लगी हुई है। उसे भी बहुत गुस्सा आया और उसने ज़िद की कि वह उन बदनाम औरतों को, जो वेश्याओं की श्रेणी में आती हैं, बाहर निकाल देगा। यह कहकर वह श्रीमती विद्या की ओर बढ़ा। श्रीमती विद्या ने विजय सिंह को उकसाया कि वह उस मृत महिला की छाती में गोली मार दे, ताकि उसे चैन मिल सके। इस पर विजय सिंह ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और अजय सिंह पर अंधाधुंध गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं।

4. यह घटना शाम लगभग 5.15 बजे हुई और अजय सिंह खुले मैदान में एक नीम के पेड़ के पास ज़मीन पर गिरकर मर गया। घटना स्थल के पास पिकेट इयूटी पर तैनात दो कांस्टेबल वहाँ आए और विजय सिंह को ललकारा। उन्होंने विजय सिंह को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन विजय "अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



सिंह ने उन पर ईंट फेंक दी, जिससे एक कांस्टेबल को चोट लग गई। विजय सिंह भागने में कामयाब रहा, लेकिन एक कांस्टेबल ने उसका पीछा किया। विजय सिंह पी.पी.एन. कॉलेज के हॉस्टल में घुस गया, लेकिन स्थानीय पुलिस और आम लोगों ने उसे घेर लिया। किसी तरह वह हॉस्टल के कमरे से बाहर आया और एस.आई. धर्मेन्द्र सिंह ने कांस्टेबल अनिरुद्ध सिंह (पी.डब्ल्यू. 8) और अन्य गवाहों की मौजूदगी में उसे और पिस्तौल (सामग्री प्रदर्श 1) को पकड़कर गिरफ्तार कर लिया।

5. घटना की रिपोर्ट मृतक के सगे भाई अशोक सिंह (पी.डब्ल्यू. 1) ने उसी दिन शाम 6.10 बजे थाना बेकनगंज में दर्ज कराई। यह थाना घटना स्थल से लगभग ढाई फर्लांग की दूरी पर है। प्रदर्श क-15 (प्रदर्श क-बी) एफ.आई.आर. की कॉपी है। कहा जाता है कि मूल लिखित रिपोर्ट खो गई थी, इसलिए द्वितीयक साक्ष्य प्रस्तुत किया गया। थाने में रखी गई जनरल डायरी (प्रदर्श क-16 (एचए-9)) के क्रम संख्या 30 पर इस अपराध की एंट्री की गई।

6. अपराध दर्ज होने के बाद, स्टेशन ऑफिसर श्री धर्मेन्द्र सिंह (पी.डब्ल्यू. 9) ने मामले की विवेचना शुरू की। एस.आई. इंगर सिंह (पी.डब्ल्यू. 4), जो उस समय पी.एस. बेकनगंज में तैनात थे, घटना स्थल पर गए और मृतक के शव का पंचनामा किया तथा पंचनामा फर्द (प्रदर्श क-1) तैयार किया। उन्होंने शव का चालान (प्रदर्श क-2) और शव का स्केच (प्रदर्श क-3) भी तैयार किया, जिसमें चोटों की संभावित जगह दिखाई गई थी; साथ ही, उन्होंने मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराने के लिए एक पत्र (प्रदर्श क-4) भी लिखा। उन्होंने मृतक द्वारा पहने गए खून से सने कपड़ों को भी फर्द प्रदर्श क-5 के तहत अपने कब्जे में ले लिया। उन्होंने घटनास्थल से पीतल के पाँच खाली कारतूस भी ज़ब्त किए, जिनके निचले हिस्से पर एलएपीयूए-7.65' उभरा हुआ था, और एक ज़ब्त फर्द प्रदर्श क-6 तैयार किया। उन्होंने फर्द प्रदर्श क-13 के तहत खून से सनी और सादी मिट्टी भी इकट्ठा की।

7. थानाध्यक्ष, श्री धर्मेन्द्र सिंह (पी.डब्ल्यू. 9), जिन्होंने पी.पी.एन. कॉलेज हॉस्टल से अभियुक्त को गिरफ्तार किया था, उन्होंने अभियुक्त के कब्जे से चेकोस्लोवाकिया-48 में बनी .32 बोर की पिस्तौल (नंबर 623310) ज़ब्त करने का फर्द तैयार किया। पिस्तौल (प्रदर्श 1) और घटनास्थल से इकट्ठा किए गए खाली कारतूसों को बैलिस्टिक विशेषज्ञ द्वारा जाँच के लिए भेजा गया। बैलिस्टिक विशेषज्ञ, श्री ओम प्रकाशमणि त्रिपाठी (पी.डब्ल्यू. 6) की रिपोर्ट प्रदर्श क-10 है। श्री धर्मेन्द्र सिंह,

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



जो विवेचना के दौरान घटनास्थल पर गए थे, उन्होंने घटनास्थल का नक्शा (साइट-प्लान) प्रदर्शक-12 तैयार किया। घायल सिपाही, श्री रजनेश कुमार (पी.डब्ल्यू. 5) को पुलिस स्टेशन से एक पत्र के साथ मेडिकल विवेचना के लिए भेजा गया। उनकी मेडिकल विवेचना डॉ. आर. बी. सिंह (सी.डब्ल्यू.1) द्वारा उसी दिन रात 8:30 बजे की गई। चोट की रिपोर्ट (प्रदर्शक सी.-1) से पता चलता है कि दाहिनी बांह के अगले हिस्से के बीचों-बीच 1 सेमी x 1 सेमी का एक खरोंच का निशान था। चोट ताज़ा थी और उससे खून रिस रहा था। पीठ के निचले हिस्से की बाईं ओर, मध्य रेखा के ठीक बगल में और सुपीरियर इलियाक स्पाइन के ठीक ऊपर वाले हिस्से पर 8 सेमी x 4 सेमी का एक खरोंच वाला नीलगू का निशान था। डॉ. सिंह की राय में, ये दोनों चोटें साधारण थीं और किसी कुंद व कठोर वस्तु तथा रगड़ लगने के कारण हुई थीं।

8. मृतक के शव का पोस्टमार्टम डॉ. आर.पी. बाजपेयी (पी.डब्ल्यू. 7) द्वारा 5.11.1983 को दोपहर 1:45 बजे से किया गया। शव की पहचान कांस्टेबल रघुबीर सिंह और ज़िलेदार सिंह ने की। मृतक का शरीर औसत कद-काठी का था; उसके दोनों हाथों-पैरों में 'रिगर मोर्टिस' (शरीर का अकड़ना) मौजूद था। पीठ, कूल्हों और जांघों पर 'पोस्ट-मॉर्टम स्टेनिंग' (मृत्यु के बाद शरीर पर पड़ने वाले निशान) मौजूद थे, और पेट फूला हुआ था। डॉ. बाजपेयी द्वारा तैयार किया गया पोस्टमार्टम प्रमाण पत्र प्रदर्शक-7 है। मृतक के शरीर पर मृत्यु से पूर्व निम्नलिखित चोटें पाई गईं:-

i) गर्दन के बाईं ओर 1 सेमी x 1 सेमी आकार का बंदूक की गोली का प्रवेश घाव, जिसके किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे; यह घाव बाईं ओर के 'स्टर्नोक्लेविकुलर जोड़' से 1.5 सेमी (डेढ़ सेमी) ऊपर स्थित था और पीछे की ओर निर्देशित था।

ii) जबड़े के बाईं ओर के कोण के ठीक ऊपर 1 सेमी x 1 सेमी आकार का बंदूक की गोली का प्रवेश घाव, जिसके किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे और जो पीछे की ओर निर्देशित था।

iii) सीने के बाईं ओर 1 सेमी x 1 सेमी x शरीर के अंदर तक गहरा बंदूक की गोली का प्रवेश घाव; यह घाव बाईं ओर के निप्पल से 14 सेमी नीचे स्थित था, इसके किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे और यह पीछे की ओर निर्देशित था।

iv) सीने के बाईं ओर 1 सेमी x 1 सेमी x शरीर के अंदर तक गहरा बंदूक की गोली का प्रवेश घाव; यह घाव बाईं ओर के निप्पल से 14 सेमी नीचे स्थित था, इसके किनारे अंदर की ओर मुड़े हुए थे और यह पीछे की ओर निर्देशित था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



v) पीठ के दाईं ओर 1 सेमी x 1 सेमी x शरीर के अंदर तक गहरा बंदूक की गोली का निकास घाव; यह घाव रीढ़ की हड्डी के अंतिम ग्रीवा कशेरुका से 13 सेमी नीचे स्थित था, सामने की ओर निर्देशित था और इसके किनारे बाहर की ओर मुड़े हुए थे।

vi) पीठ के बाईं ओर 1 सेमी x 1 सेमी x शरीर के अंदर तक गहरा बंदूक की गोली का निकास घाव; इसके किनारे बाहर की ओर मुड़े हुए थे, यह घाव बाईं ओर के कंधे की हड्डी के कोण से 19 सेमी नीचे स्थित था और सामने की ओर निर्देशित था।

vii) बाईं जांघ के बाहरी हिस्से पर 26 सेमी x 8 सेमी आकार के क्षेत्र में कई 'कंट्यूजन' (चोट के निशान/खरोंचें) मौजूद थे; यह क्षेत्र बाईं ओर के घुटने से 7 सेमी ऊपर स्थित था।

viii) दाहिने पैर के सामने 6 सेमी x 3 सेमी का घाव, दाहिने घुटने के जोड़ से 15 सेमी नीचे।

9. अंदरूनी विवेचना करने पर, शव-परीक्षण सर्जन ने पाया कि प्लूरा (फेफड़ों की झिल्ली) पूरी तरह से छिदी हुई थी; दाएँ और बाएँ फेफड़े भी पूरी तरह से छिदे हुए थे, और दोनों कैविटीज़ (गुहाओं) में डेढ़ लीटर खून मौजूद था। दिल खाली था। पेरिटोनियम (पेट की झिल्ली) भी पूरी तरह से छिदी हुई थी। पेट की कैविटी में डेढ़ लीटर खून था। गॉल ब्लैडर (पित्ताशय) पूरी तरह से छिदा हुआ था और उसका रंग पीला पड़ गया था। वह आधा भरा हुआ था। मृतक की पीठ के निचले और ऊपरी हिस्से तथा गर्दन से दो गोलियाँ बरामद की गईं। उन्हें एक सीलबंद पैकेट में रखा गया और विवेचना तथा अन्य कागजातों के साथ आगे भेजने के लिए संबंधित पुलिसकर्मियों को सौंप दिया गया। डॉ. बाजपेयी की राय में, मौत का कारण आग्नेयास्त्र (बंदूक) से लगी चोटों के परिणामस्वरूप हुआ 'शॉक' और अत्यधिक रक्तस्राव था।

10. विवेचना अधिकारी ने कई लोगों से पूछताछ किया और विवेचना के दौरान आवश्यक औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद, 14.10.83 को दो अभियुक्तगण—विजय सिंह और श्रीमती विद्या—के खिलाफ आरोप-पत्र (प्रदर्श का.-14) प्रस्तुत किया। सुपुर्गी की कार्यवाही श्री बी.एल. सचदेवा, मुख्य मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट, कानपुर द्वारा की गई, जिन्होंने अपने दिनांक 7.2.1984 के आदेश द्वारा अभियुक्तगण को सत्र न्यायालय के समक्ष विचारण का सामना करने के लिए सुपुर्द कर दिया।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



11. अभियुक्त विजय सिंह पर भा.दं.सं. की धारा 302 के तहत दंडनीय अपराध का आरोप लगाया गया, जबकि अभियुक्त श्रीमती विद्या पर भा.दं.सं. की धारा 34 की सहायता से उसी अपराध का आरोप लगाया गया। उन्होंने आरोपों से इनकार किया और विचारण की माँग किया।

12. अभियुक्तगण का पक्ष आरोपों से पूरी तरह इनकार करने का है। अभियुक्त विजय सिंह ने कहा कि घटना के समय वह घर पर मौजूद नहीं था। शाम लगभग 7 या 7.15 बजे जब वह अपने घर लौटा, तो उसे पता चला कि कोई पुलिस इंस्पेक्टर उसके घर से उसकी पिस्तौल ले गया है। इसके बाद, उसे और उसके भाई अशोक सिंह को पूछताछ के लिए पुलिस स्टेशन ले जाया गया, और वहाँ किसी कागज़ पर धमकी देकर अशोक कुमार के हस्ताक्षर ले लिए गए। श्रीमती विद्या ने सभी मुख्य तथ्यों के बारे में अपनी अनभिज्ञता व्यक्त की है; उन्होंने कहा है कि उन्हें रात लगभग 11 या 12 बजे उनके अपने ही घर से गिरफ्तार किया गया था। अभियुक्त की ओर से कोई मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया। वर्ष 1984 के केस संख्या 214 में, दं.प्र.सं. की धारा 107/116 के अंतर्गत, चालान रिपोर्ट की एक प्रति यह दर्शाने के लिए प्रस्तुत की गई है कि स्थानीय पुलिस अभियुक्त विजय सिंह के प्रति द्वेष रखती थी।

13. ट्रायल के दौरान अभियोजन पक्ष ने कुल 12 गवाहों से पूछताछ की। चार और लोगों से कोर्ट के गवाहों के तौर पर पूछताछ की गई। अशोक सिंह (पी.डब्ल्यू. 1), सुबोध सकसेना (पी.डब्ल्यू. 2) और श्रीमती इंदिरा (पी.डब्ल्यू. 3) इस घटना के चश्मदीद गवाह हैं। वे बाद में अपने बयान से पक्षद्रोही हो गए और उन्होंने अभियोजन पक्ष की कहानी का समर्थन नहीं किया। पी.डब्ल्यू. 4 उपनिरीक्षक इंगर सिंह हैं, जिन्होंने मृतक के शव का पोस्टमार्टम करवाने के लिए पंचायतनामा का फर्द और अन्य दस्तावेज़ तैयार किए थे। पी.डब्ल्यू. 5 रजनीश कुमार और पी.डब्ल्यू. 8 अनिरुद्ध सिंह, वे कांस्टेबल हैं जो घटना के समय परेड क्रॉसिंग पर पिकेट ड्यूटी पर तैनात थे। उन्हें भी इस घटना का चश्मदीद गवाह माना जाता है, क्योंकि उनके अनुसार, अभियुक्त विजय सिंह ने उनकी आँखों के सामने ही मृतक पर गोली चलाई थी। पी.डब्ल्यू. 6 श्री ओम प्रकाशमणि त्रिपाठी हैं, जो बैलिस्टिक विशेषज्ञ हैं; उन्होंने अपनी तैयार की हुई बैलिस्टिक रिपोर्ट (प्रदर्श क-10) और अपनी राय के लिए उन्हें भेजे गए कारतूस, गोलियों और पिस्तौल को सही साबित किया है। डॉ. आर.के. बाजपेयी (पी.डब्ल्यू. 7) पोस्टमार्टम सर्जन हैं। जांच अधिकारी श्री धर्मेंद्र सिंह, जिन्होंने अभियुक्त विजय सिंह को गिरफ्तार भी किया था, पी.डब्ल्यू. 9 हैं। उन्होंने अभिलेख पर मौजूद विभिन्न दस्तावेज़ों और जांच के दौरान उनके द्वारा पूरी की गई औपचारिकताओं को सही साबित “अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



किया है। पी.डब्ल्यू. 10 हेड कांस्टेबल लक्ष्मी स्वरूप खरे हैं, जिन्होंने 'चिक एफ.आई.आर.' तैयार की थी और अपराध की एंट्री की थी। पी.डब्ल्यू. 11 संतोष कुमार और पी.डब्ल्यू. 12 राम नारायण, वे कांस्टेबल हैं जिन्हें मूल एफ.आई.आर. और चिक एफ.आई.आर. के खो जाने की बात को साबित करने के लिए बुलाया गया था। डॉ. आर.बी. सिंह (सी.डब्ल्यू.1) से, पी.डब्ल्यू. 5 रजनीश कुमार के शरीर पर पाई गई चोटों से संबंधित 'चोट रिपोर्ट' (प्रदर्श सी-1) को साबित करने के लिए पूछताछ की गई है। इंद्र नारायण द्विवेदी (सी.डब्ल्यू.2) कानपुर कलेक्ट्रेट में 'आर्म्स क्लर्क' हैं। उनसे यह साबित करने के लिए पूछताछ की गई है कि विजय सिंह के पास पिस्तौल रखने का लाइसेंस है (प्रदर्श) 1. सी.डब्ल्यू.3, कांस्टेबल मोती लाल और सी.डब्ल्यू.4, कांस्टेबल विद्या कांत शुक्ला की भी, मूल लिखित रिपोर्ट और चिक एफ.आई.आर. के गुम होने को साबित करने के लिए विवेचना की गई है।

14. पी.डब्ल्यू. 1, अशोक सिंह; पी.डब्ल्यू. 2, सुबोध सकसेना और पी.डब्ल्यू. 3, श्रीमती इंदिरा, जो घटना के प्रत्यक्षदर्शी और गवाह थे, उन्होंने अभियोजन पक्ष की कहानी को साफ तौर पर नकार दिया है, जिसके बाद अभियोजन पक्ष ने उन्हें 'होस्टाइल' (विरोधी गवाह) घोषित कर दिया। पी.डब्ल्यू. 1 मृतक का भाई है और इस मामले में पहला सूचनाकर्ता है; जैसा कि अभियोजन पक्ष ने बताया है, घटना की रिपोर्ट पहले सूचनाकर्ता द्वारा 4.11.1983 को शाम 6:10 बजे दर्ज कराई गई थी। हालाँकि, उसकी गवाही से यह पूरी तरह स्पष्ट है कि गवाह ने पुलिस स्टेशन में वही लिखा जो उसे लिखने के लिए कहा गया था। उसकी गवाही से यह भी पता चलता है कि जब उसके भाई को गोली मारी गई थी, तब वह वहाँ मौजूद नहीं था; उसने अपने भाई को ज़मीन पर पड़ा हुआ केवल तब देखा, जब वह शाम 6 बजे अपने घर लौटा। पी.डब्ल्यू. 2 सुबोध सकसेना है, जो मृतक का एक दोस्त था और कथित तौर पर घटना स्थल पर मौजूद था; लेकिन उसकी गवाही से यह भी पता चलता है कि उसने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि विजय सिंह ने मृतक अजय सिंह की हत्या नहीं की है। पी.डब्ल्यू. 3 श्रीमती इंदिरा हैं; उनकी गवाही को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि विद्या देवी उनकी नौकरानी थी, न कि विजय सिंह की प्रेमिका। इस प्रकार, अभियोजन पक्ष द्वारा बताई गई कहानी पूरी तरह से बेबुनियाद है। इसके अलावा, उन्होंने यह भी कहा है कि उन्होंने यह नहीं देखा कि अजय सिंह की हत्या किसने की, और न ही उन्होंने गोली चलने की कोई आवाज़ सुनी। प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) या घटना रिपोर्ट की मूल प्रति पुलिस स्टेशन के अधिकारियों द्वारा कभी उपलब्ध नहीं कराई गई,

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



जिससे अभियोजन पक्ष के बयान पर संदेह के बादल मंडराने लगते हैं। इसी क्रम में, पी.डब्ल्यू. 1—जो कथित तौर पर पहला सूचनाकर्ता है—ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उसने रिपोर्ट में जो कुछ भी लिखा था, वह उसे पुलिस अधिकारियों द्वारा बताया गया था।

15. इस घटना के दो अन्य कथित चश्मदीद गवाह पी.डब्ल्यू. 5, रजनीश कुमार और पी.डब्ल्यू. 8, अनिरुद्ध सिंह हैं, जो कांस्टेबल हैं। घटना वाले दिन उन्हें परेड क्रॉसिंग पर पिकेट ड्यूटी पर तैनात किया गया था, जो घटना स्थल से लगभग 300 कदम की दूरी पर है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इस बात की पुष्टि करने के लिए कोई अभिलेख मौजूद नहीं था कि इन कांस्टेबलों को वास्तव में उस क्रॉसिंग पर पिकेट ड्यूटी सौंपी गई थी। पुलिस स्टेशन से जाने और वापस रिपोर्ट करने की एंट्री हमेशा 'जनरल डायरी' में दर्ज और रखी जाती हैं, लेकिन इस मामले में ऐसी कोई एंट्री अभिलेख पर नहीं लाई गई। इससे यह बहुत ही असंभव प्रतीत होता है कि ये कांस्टेबल वास्तव में घटना स्थल पर मौजूद थे और इसलिए वे इस मामले में चश्मदीद गवाह बन सकते थे। इसके अलावा, घटना स्थल परेड क्रॉसिंग से 300 कदम की दूरी पर था, जहाँ कथित तौर पर ये दोनों कांस्टेबल तैनात थे। गवाहों द्वारा इस बात का कोई भी विश्वसनीय स्पष्टीकरण नहीं दिया गया कि उन्होंने अपनी ड्यूटी का स्थान क्यों और कैसे छोड़ा, घटना स्थल पर कैसे पहुँचे, वहाँ उन्होंने विजय सिंह को मृतक पर गोली चलाते हुए कैसे देखा, और फिर उसे गिरफ्तार करने के प्रयास में उसका पीछा कैसे किया। इसके अतिरिक्त, दोनों कांस्टेबलों की उपस्थिति से संबंधित तथ्य न तो 'प्रथम सूचना रिपोर्ट' (एफ.आई.आर.) में और न ही 'विवेचना अधिकारी' द्वारा तैयार किए गए 'साइट-प्लान' में उल्लिखित हैं। यदि ये तथ्य दर्ज होते, तो इनसे यह स्पष्ट हो जाता कि इन दोनों कांस्टेबलों ने कथित अपराध को ठीक किस स्थान से देखा था। जैसा कि पी.डब्ल्यू. 5, रजनीश कुमार ने आरोप लगाया है, अपराध को देखने के बाद उन्होंने पी.डब्ल्यू. 8, अनिरुद्ध सिंह के साथ मिलकर विजय सिंह को पकड़ने की कोशिश की। इस दौरान विजय सिंह ने उन पर ईंटें फेंकना शुरू कर दिया, जिसके कारण पी.डब्ल्यू. 5 घायल हो गए। इस बात की पुष्टि 'चोट रिपोर्ट' के माध्यम से भी हुई है, जिसे 'प्रदर्श सी1' के रूप में चिह्नित किया गया है। हालाँकि, गवाह रजनीश कुमार के अनुसार, ईंटें फेंके जाने के कारण उनके पैर में चोट लगी थी; जबकि 'चोट रिपोर्ट' में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया गया है कि उनके दाहिने हाथ की कलाई के ऊपरी हिस्से के मध्य भाग पर 1 सेमी x 1 सेमी का एक खरोंच का निशान था, और उनकी पीठ के निचले हिस्से की बाईं ओर 8 सेमी x 4 सेमी का एक खरोंच-युक्त नीलगू का

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



निशान था। उन्होंने आगे यह भी बताया है कि जिस डॉक्टर ने पी.डब्ल्यू. का इलाज किया था...

5, घायल होने के बाद, सी.डब्ल्यू. 1 के रूप में उसे परीक्षित किया गया है और उसकी गवाही को देखने से यह पता चलता है कि उसने चोट की रिपोर्ट में जो कुछ भी बताया था, उसे ही दोहराया है। हालाँकि, इस गवाह का परीक्षण न्यायालय द्वारा बुलाए गए गवाह के रूप में की गई थी, न कि मेडिकल विवेचना रिपोर्ट को साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष की ओर से उसे पेश किया गया था।

16. अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने यह दलील दी है कि अभिलेख पर उपलब्ध मेडिकल सबूतों से प्रत्यक्षदर्शी बयान गलत साबित होता है। मृतक की चोट संख्या 7 और 8 (जो मृत्यु से पहले लगी थीं) को मृतक को लगी खरोंचें बताया गया है, और अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किए गए प्रत्यक्षदर्शी बयान को देखने से यह पता चलता है कि उस बयान के अनुसार, अपीलकर्ता ने केवल अपने हथियार से गोली चलाई थी। इस प्रकार, कथित प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही के अनुसार, मृतक की चोट संख्या 7 और 8 पूरी तरह से बिना किसी स्पष्टीकरण के रह जाती हैं, जिससे अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा बताए गए घटना के तरीके पर संदेह के गहरे बादल छा जाते हैं। जांच करने वाले डॉक्टर (जिन्हें पी.डब्ल्यू. 7 के रूप में परीक्षित किया गया था) ने स्पष्ट रूप से कहा है कि चोट संख्या 7 और 8 बार-बार गिरने से, या मृतक के किसी नाली में गिर जाने के कारण लगी हो सकती हैं; हालाँकि, अभियोजन पक्ष के किसी भी गवाह ने ऐसी कोई बात नहीं कही है।

17. बैलिस्टिक रिपोर्ट अभियोजन पक्ष की कहानी का समर्थन नहीं करती है। बैलिस्टिक विशेषज्ञ (पी.डब्ल्यू. 6), श्री ओम मणि त्रिपाठी ने अपनी रिपोर्ट में यह साबित किया है कि घटना स्थल से कथित तौर पर पाँच खाली कारतूस बरामद किए गए थे, जिसके बाद पी.डब्ल्यू. 4, एस.आई. इंगर सिंह द्वारा एक जब्ती फर्द तैयार किया गया था। उक्त रिपोर्ट में आगे यह भी कहा गया है कि बरामद किए गए कारतूसों में से, दो कारतूस (जिन पर ई.सी.-2 और ई.सी.-3 नंबर अंकित थे) कथित अभियुक्त से बरामद पिस्तौल से नहीं चलाए गए थे; जबकि कारतूस संख्या ई.सी.-1, ई.सी.-4, ई.सी.-5 और ई.सी.-6 के बारे में यह राय दी गई थी कि उन्हें उक्त पिस्तौल से ही चलाया गया था। बैलिस्टिक विशेषज्ञ ने अपनी गवाही में स्पष्ट रूप से कहा है कि अपराध के समय दो अलग-अलग हथियारों का इस्तेमाल किया गया था, यानी एक राइफल और एक बंदूक; जबकि प्रत्यक्षदर्शी बयान के अनुसार, केवल यह कहा गया था कि अपीलकर्ता ने अपनी लाइसेंसी “अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



पिस्तौल से ही सभी गोलियाँ चलाई थीं। इस मामले के अभिलेख से यह भी सामने आया है कि घटना स्थल से बरामद कुछ खाली कारतूस अभियुक्त की पिस्तौल से नहीं चलाए गए थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अपराध को अंजाम देने में निश्चित रूप से किसी दूसरे हथियार का भी इस्तेमाल किया गया था; और यह बात एक बार फिर इस तथ्य को स्थापित करती है कि कथित घटना उस तरीके से कभी हुई ही नहीं, जैसा कि अभियोजन पक्ष द्वारा दावा किया गया है। खाली कारतूसों और हथियार को विशेषज्ञ के पास भेजने में 11 हफ्तों की देरी हुई, और इसलिए अभियोजन पक्ष द्वारा अभियुक्त से और घटनास्थल से बरामद की गई चीजों के संबंध में पेश किए गए सभी सबूत संदिग्ध हो जाते हैं। पी.डब्ल्यू. 9 की गवाही के अनुसार, हालाँकि अपीलकर्ता को अपराध में इस्तेमाल किए गए कथित हथियार के साथ ही घटनास्थल से गिरफ्तार किया गया था, फिर भी विवेचना अधिकारी ने बरामद हथियार से अपीलकर्ता के फिंगरप्रिंट सुरक्षित/संरक्षित नहीं किए; यह बात एक बार फिर यह संकेत देती है कि अभियोजन पक्ष ने जान-बूझकर उन महत्वपूर्ण सबूतों को छिपाया, जिनसे अभियोजन पक्ष की कहानी की झूठी और बेबुनियाद प्रकृति का पर्दाफाश हो सकता था।

18. अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता ने यह दलील दी है कि अपीलकर्ता की पहचान परेड नहीं की गई थी। अभियोजन पक्ष स्वयं यह दावा करता है कि कथित घटना दिन-दहाड़े एक खुले आँगन में हुई थी, और इसलिए, उसका दावा है कि अभियुक्त की पहचान करने में किसी भी गलती की कोई गुंजाइश नहीं थी। हालाँकि, यही दावा पहचान की आवश्यकता और निष्पक्षता को ही खत्म कर देता है, क्योंकि विवेचना के दौरान कभी भी कोई पहचान परेड आयोजित नहीं की गई थी। पहचान परेड न कराने की यह चूक—विशेष रूप से तब, जब विवेचना या न्यायालय की कार्यवाही के दौरान अभियुक्त को गवाहों के सामने बाद में पेश किया गया हो—ऐसी पहचान को अत्यंत असुरक्षित, दोषपूर्ण और कानूनी रूप से अविश्वसनीय बना देती है। केवल "दिन के उजाले" या "खुली जगह" का दावा कर देने मात्र से निष्पक्ष पहचान प्रक्रिया की अनिवार्य आवश्यकता समाप्त नहीं हो जाती; विशेष रूप से तब, जब अभियोजन पक्ष केवल 'डॉक्स पहचान' पर निर्भर रहना चाहता हो—जो कि अपने आप में कमजोर होती है और किसी को दोषी ठहराने का एकमात्र आधार नहीं बन सकती।

19. विद्वान ए.जी.ए. ने अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा दी गई दलीलों का पुरजोर विरोध किया है, और यह दलील दी है कि यह एक ऐसे मामले से संबंधित है, जिसमें एक सगे "अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



भाई ने दिन-दहाड़े दूसरे सगे भाई की हत्या कर दी। गवाह-पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-3-मृतक के सगे भाई और भाभी हैं; लेकिन उन्होंने अभियोजन पक्ष के मामले को नकार दिया है। यह महसूस करने के बाद कि एक भाई-अजय सिंह-की तो पहले ही मृत्यु हो चुकी है, और अब दूसरा भाई-यानी अभियुक्त विजय सिंह-जीवन भर जेल में रहेगा, उन्होंने अभियुक्त-अपीलकर्ता को बचाने के उद्देश्य से अभियोजन पक्ष के मामले को नकार दिया है। उन्होंने आगे यह भी दलील दी है कि पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 की गवाही विश्वसनीय है, और उन्होंने अभियोजन पक्ष के मामले को सिद्ध कर दिया है। घटना के तुरंत बाद, पी.डब्ल्यू.-8 की उपस्थिति में अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया गया था। अतः, विचारण न्यायालय के समक्ष अभियोजन पक्ष का मामला पूरी तरह से सिद्ध हो चुका था। विचारण न्यायालय द्वारा अपीलकर्ता को दोषी ठहराते हुए पारित किए गए निर्णय और आदेश की पुष्टि की जानी चाहिए, और इस अपील को खारिज कर दिया जाना चाहिए।

20. विरोधी पक्षों की दलीलें सुनने, अभिलेख पर मौजूद सामग्री और विचारण न्यायालय के फैसले और आदेश को देखने के बाद, हमने पाया कि पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-3 ने अभियोजन पक्ष के मामले से इनकार किया है; हालाँकि, इसका एक उचित कारण है, क्योंकि पी.डब्ल्यू.-1 मृतक का सगा भाई है और पी.डब्ल्यू.-3 मृतक की सगी भाभी है। पी.डब्ल्यू.-2 परिवार का एक साझा मित्र है और इसलिए, उसने मृतक या अपीलकर्ता के परिवार के किसी भी सदस्य के साथ दुश्मनी से बचने के लिए ही अभियोजन पक्ष के मामले से इनकार किया है। पी.डब्ल्यू.-2 के आचरण को अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि परिवार का साझा मित्र होने के नाते, वह किसी एक पक्ष के पक्ष में बयान देकर अपने लिए मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था। उसने न्यायालय के सामने केवल इतना कहा कि अजय सिंह की हत्या उसकी आँखों के सामने नहीं हुई थी। अपनी जिरह में, उसने इस बात से इनकार किया कि विवेचना अधिकारी ने कभी उसका यह बयान अभिलेख किया था कि विजय सिंह ने अजय सिंह की हत्या की थी। समय बीतने के साथ, पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-3 ने, अपीलकर्ता के उसी परिवार का सदस्य होने के कारण, उसके खिलाफ मुकदमा चलाने का अपना उत्साह खो दिया। यह कोई असामान्य बात नहीं है। ऐसे मामलों में जहाँ परिवार का कोई करीबी सदस्य परिवार के ही किसी दूसरे करीबी सदस्य की हत्या कर देता है, तो समय बीतने के साथ, परिवार के अन्य सदस्य-जो अपराध के गवाह होते हैं-अक्सर

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अपने भाग्य के आगे घुटने टेक देते हैं और जीवित सदस्य को बचाने के लिए न्यायालय के सामने पक्षद्रोही हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें यह एहसास हो जाता है कि मृतक अब वापस नहीं आएगा।

21. अभियोजन पक्ष के मामले को साबित करने के लिए पी.डब्ल्यू.-5, कांस्टेबल रजनीश सिंह, और पी.डब्ल्यू.-8, कांस्टेबल अनिरुद्ध सिंह की सक्षमता के संबंध में, हम पाते हैं कि एकमात्र तर्क यह दिया गया है कि, यद्यपि वे घटना की तारीख को परेड क्रॉसिंग पर पिकेट ड्यूटी पर तैनात थे—जो घटना स्थल के बहुत करीब था—फिर भी जनरल डायरी में घटना स्थल पर उनके आने और जाने की कोई एंट्री दर्ज नहीं है। हम पाते हैं कि पुलिस विनियमों के प्रावधानों का पालन नहीं किया गया है, लेकिन यह केवल एक अनियमितता है, जिसे न्यायालय के समक्ष प्रत्यक्षदर्शियों के बयान पर अविश्वास करने का आधार नहीं बनाया जा सकता। विचारण न्यायालय ने स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष दर्ज किया है कि सत्य तक पहुँचने के अपने प्रयास में उसने दोनों गवाहों की गवाही की हर बारीकी से विवेचना की है। विचारण न्यायाधीश ने स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष दर्ज किया है कि न्यायालय ने गवाहों के हाव-भाव को बहुत सावधानी से देखा है और उन्हें सच्चा तथा सीधा-सादा पाया है, और न्यायालय के समक्ष उनकी गवाही को भी विश्वसनीय पाया है। विचारण न्यायाधीश ने उन्हें काफी स्वाभाविक और विश्वसनीय गवाह माना है, जिनके खिलाफ ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया गया था कि वे अपीलकर्ता के प्रति कोई द्वेष रखते थे। विचारण न्यायाधीश ने पाया कि उनकी गवाही यह थी कि उन्होंने अपराध होते हुए देखा है। विचारण न्यायाधीश ने यह भी पाया कि उ. प्र. पुलिस विनियम का नियम संख्या 195, पुलिस अधिकारी के ड्यूटी पर जाने और ड्यूटी से लौटने की जानकारी जनरल डायरी में दर्ज करने का प्रावधान करता है। पी.डब्ल्यू.-9, उपनिरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह ने यह साबित किया है कि पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 परेड क्रॉसिंग पर पिकेट ड्यूटी पर तैनात थे, लेकिन गलती से इसकी एंट्री दर्ज नहीं हो पाई थी। उन्होंने आगे यह भी साबित किया कि उक्त गवाह पिकेट ड्यूटी पर इसलिए तैनात थे, क्योंकि उस दिन दीपावली का त्योहार था और यातायात के सुचारु संचालन तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष व्यवस्थाएँ की गई थीं। हम यह भी पाते हैं कि विचारण न्यायालय के समक्ष ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है, जिससे यह साबित हो सके कि पिकेट ड्यूटी पर पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 नहीं, बल्कि कोई अन्य दो पुलिसकर्मी तैनात थे।

22. हम यहाँ यह दर्ज करना उचित समझते हैं कि विचारण न्यायाधीश को अपीलीय न्यायालय की तुलना में एक अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है। विचारण न्यायाधीश को अपीलीय न्यायालय की “अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अपेक्षा कई लाभ प्राप्त होते हैं, क्योंकि वह उस न्यायिक प्रक्रिया का संचालन करता है, जहाँ मौखिक तथा दस्तावेजी, दोनों प्रकार के साक्ष्यों की सहायता से तथ्यों को स्थापित किया जाता है। अपीलीय न्यायालय का ध्यान उन कानूनी और तथ्यात्मक गलतियों पर होता है जो विचारण न्यायाधीश ने की हों, लेकिन यह विचारण न्यायाधीश ही होता है जो गवाहों की विश्वसनीयता और विचारण न्यायालय के सामने पेश किए गए सबूतों का सीधे तौर पर मूल्यांकन करने की एक खास स्थिति में होता है।

23. सच्चाई तक पहुँचने के लिए विचारण न्यायाधीश गवाह के हाव-भाव, शारीरिक भाषा और बोलने के लहजे को देख सकता है। प्रति-परीक्षा के दौरान किसी गवाह को देखकर विचारण न्यायालय जो प्रभाव ग्रहण कर सकता है, वे अपीलीय न्यायालय को उपलब्ध नहीं होते। अपीलीय न्यायालय केवल विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए बयानों को पढ़ सकता है, जिनसे वे महत्वपूर्ण गैर-मौखिक संकेत नहीं मिल पाते जिन्हें विचारण न्यायाधीश ने सीधे तौर पर देखा था।

24. विचारण न्यायाधीश गवाहों के चेहरों को पढ़ते हैं, और इसलिए, गवाह के हाव-भाव और आचरण के बारे में उनके तथ्यों के निष्कर्षों को अपील में आसानी से बदला नहीं जाता, जब तक कि वे पूरी तरह से गलत या गैर-कानूनी न हों।

25. अपीलकर्ता के विद्वान सीनियर अधिवक्ता की, बैलिस्टिक विशेषज्ञ की रिपोर्ट के संबंध में दी गई दलील पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। पी.डब्ल्यू.-6 के बयान में यह बात सामने आई है कि घटना स्थल से पाँच खाली कारतूस बरामद किए गए थे। उनके अनुसार, उन कारतूसों से गोली चलाए जाने की गंध आ रही थी। मृतक के शरीर से ऑटोप्सी डॉक्टर द्वारा दो गोलियाँ बरामद की गईं। गोलियों और खाली कारतूसों को चार सीलबंद बंडलों में पी.डब्ल्यू.-6 के पास भेजा गया था। परीक्षण और विवेचना के बाद, पी.डब्ल्यू.-6 इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ईसी-1, ईसी-4, ईसी-5 और ईसी-6 अभियुक्त की पिस्तौल से चलाए गए थे, जबकि ईसी-2 और ईसी-3 उक्त पिस्तौल से नहीं चलाए गए थे। वे मृतक के शरीर से निकाली गई गोलियों—जिनका क्रमांक ईबी-1 और ईबी-2 था—के संबंध में कोई निश्चित राय नहीं दे सके। अपीलकर्ता के विद्वान सीनियर अधिवक्ता की दलील यह है कि पी.डब्ल्यू.-6 ने यह स्वीकार किया था कि अपराध में दो हथियारों का इस्तेमाल किया गया था, न कि केवल एक का (यानी, अभियुक्त से बरामद की गई पिस्तौल का)। विचारण न्यायालय ने भी इस दलील पर विचार किया था और यह पाया था कि बैलिस्टिक

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



विशेषज्ञ की राय अभियोजन पक्ष के मामले को कमज़ोर नहीं करती है, बशर्ते अन्य विश्वसनीय और भरोसेमंद गवाहों की गवाही पर विश्वास किया जाए और उसे स्वीकार किया जाए—ऐसे गवाह, जिनके मन में अभियुक्त के प्रति कोई द्वेष या दुर्भावना नहीं है। हम भी इसी मत के हैं।

26. अपीलकर्ता द्वारा मृतक पर अपनी पिस्तौल से की गई अंधाधुंध गोलीबारी, मृतक के शरीर पर पाए गए चार प्रवेश घावों और दो निकास घावों से साबित हो गई। प्रदर्शक-5, मृतक के कपड़ों का फर्द, एस.आई. डूंगर सिंह द्वारा तैयार किया गया था, जिसमें मृतक का कुर्ता, पाजामा और बनियान सील किए गए थे। मृतक के कुर्ते पर बारूद के कालेपन के साथ पाँच छेद पाए गए।

27. अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता का आगे का तर्क यह है कि विवेचना अधिकारी ने बरामद हथियार पर अपीलकर्ता के फिंगरप्रिंट (उंगलियों के निशान) सुरक्षित/संरक्षित नहीं किए, हालाँकि उसे पी.डब्ल्यू.-9 द्वारा मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया था। यह चूक अभियोजन पक्ष के मामले की असत्यता को साबित करती है और विचार योग्य भी है।

28. यह तर्क आमतौर पर उठाया जाता है, लेकिन आग्नेयास्त्रों से बरामद फिंगरप्रिंट के मामले बहुत कम होते हैं। इसके कारण कई कारकों से संबंधित हैं; हथियार को संभालने का तरीका, हथियार की धातु की सतह की प्रकृति, और क्या आर्द्रता, बारिश और अत्यधिक तापमान जैसी मौसम की स्थितियाँ फिंगरप्रिंट से नमी के तेजी से वाष्पीकरण का कारण बनीं, जिससे वे फॉरेंसिक पाउडर के चिपकने के लिए बहुत अधिक सूख गए। बंदूक की खुरदरी सतह फिंगरप्रिंट विशेषज्ञ के लिए और समस्याएँ पैदा करती है। यदि बंदूक का ट्रिगर और पकड़ खुरदरी नहीं है, तो सतह पर कई एक-दूसरे पर चढ़े हुए निशान पाए जाते हैं। यह एक स्थापित कानून है कि हथियार की बरामदगी न होना भी अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं है, जहाँ प्रत्यक्ष, विश्वसनीय और निर्विवाद मौखिक साक्ष्य मौजूद हों। इसलिए, बरामद पिस्तौल से फिंगरप्रिंट बरामद न होने पर भी, पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 की विश्वसनीय गवाही को ध्यान में रखते हुए अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को अभी भी बरकरार रखा जा सकता है, [देखें- *राकेश और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य*, ए.आई.आर. 2021 एस.सी. 3233; *राज्य बनाम लाली उर्फ मणि कंदन*, ए.आई.आर. 2022 एस.सी. 5034 और *गोवर्धन सिंह बनाम छत्तीसगढ़ राज्य*, (2025) आई.एस.सी. 47]।

29. अपीलकर्ता के विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता की अपीलकर्ता की टेस्ट पहचान परेड न कराए जाने के संबंध में अंतिम दलील भी बेबुनियाद है, क्योंकि अपराध करने के बाद अभियुक्त विजय सिंह

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



का पीछा पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 ने किया था। उसने पी.डब्ल्यू.-5 पर ईंट फेंकी और उसे घायल कर दिया, लेकिन पी.डब्ल्यू.-8 ने उसका पीछा करना जारी रखा, जब तक कि वह पी.पी.एन. कॉलेज के हॉस्टल में घुसकर खुद को एक कमरे में अंदर से बंद नहीं कर लिया। धर्मेन्द्र सिंह (पी.डब्ल्यू.-9), जो स्टेशन ऑफिसर थे, सूचना मिलने पर पी.पी.एन. कॉलेज पहुँचे, जहाँ पी.डब्ल्यू.-8 (अनिरुद्ध सिंह) पहले से ही मौजूद थे और उनके आसपास आम लोग भी जमा थे। जब विजय सिंह कमरे से बाहर आया, तो उसे उसकी पिस्तौल के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। अपराध करते समय उसे पी.डब्ल्यू.-9 और पी.डब्ल्यू.-8 ने, और साथ ही पी.डब्ल्यू.-5 ने भी साफ तौर पर देखा था। चश्मदीद गवाह पी.डब्ल्यू.-5 से अभियुक्त की पहचान के सवाल पर जिरह नहीं की गई थी। पी.डब्ल्यू.-8 से भी इस संबंध में कोई सवाल नहीं पूछा गया और उसने न्यायालय में भी अभियुक्त की पहचान किया

30. घटना के चश्मदीद गवाह के तौर पर पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 की गवाही की विश्वसनीयता पर काफी आपत्तियाँ उठाई गई हैं। यह आपत्ति की गई है कि पुलिसकर्मी होने के नाते, उन्हें अभियोजन पक्ष के मामले के समर्थन में गवाह के तौर पर पेश नहीं किया जा सकता था। यह तर्क सही नहीं है। यह एक स्थापित कानून है कि किसी पुलिस अधिकारी के लिए ऐसे मामले में चश्मदीद गवाह के तौर पर पेश होने पर रोक होती है, जिसकी विवेचना वह खुद कर रहा हो। ऐसे चश्मदीद गवाह की गवाही को बहुत सावधानी से देखा जाना चाहिए। हालाँकि, जहाँ पुलिसकर्मियों को विचारण न्यायालय के सामने केवल घटना के चश्मदीद गवाह के तौर पर पेश किया जाता है, वहाँ यह कानून लागू नहीं होता। इस न्यायालय की एक खंडपीठ ने 'चंद्रभान बनाम राज्य' [अपराधिक अपील संख्या 400, 1955 (इलाहाबाद)] के वाद में यह अभिनिर्धारित किया गया था कि जहाँ कोई पुलिस अधिकारी घटना का चश्मदीद गवाह हो, वहाँ उसी अधिकारी द्वारा मामले की विवेचना में की गई प्रगति को न्यायालय द्वारा संदेह की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। प्रस्तुत वाद में, पी.डब्ल्यू.-5 और पी.डब्ल्यू.-8 न तो विवेचना अधिकारी हैं और न ही उक्त मामले की विवेचना से जुड़े कोई अन्य व्यक्ति; इसलिए, उनकी गवाही केवल घटना के चश्मदीद गवाह के तौर पर है और इस न्यायालय द्वारा उन पर संदेह नहीं किया जा सकता।

31. उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए, हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष अपीलकर्ता के विरुद्ध अपने मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में सफल रहा है। विचारण न्यायालय ने अपीलकर्ता को उसके सगे भाई की हत्या के अपराध के लिए, जो भारतीय दंड संहिता (भा.दं.सं.) "अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



की धारा 302 के अंतर्गत आता है, सही रूप से दोषी ठहराया है और दंडित किया है। विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्षों में कोई विकृति नहीं है और उन्हें एतद्वारा पुष्ट किया जाता है।

32. उपरोक्त उल्लिखित आपराधिक अपील खारिज की जाती है। विचारण न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और आदेश की पुष्टि की जाती है।

33. अपीलकर्ता जमानत पर है। उसके जमानत बंधपत्र रद्द किए जाते हैं और उसके जमानतदारों को उन्मोचित किया जाता है। वह तत्काल आत्मसमर्पण करेगा और अपनी शेष सजा पूरी करेगा।

34. कार्यालय को निर्देश दिया जाता है कि वह विचारण न्यायालय का अभिलेख वापस भेजे और इस निर्णय की सूचना तत्काल विचारण न्यायालय को दे।

(जय कृष्ण उपाध्याय, न्यायमूर्ति) (सिद्धार्थ, न्यायमूर्ति)

9 फरवरी, 2026

रुचि अग्रहरि